Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

पंकज मित्रजी से साक्षात्कार

(दिनांक ३१/१०/२०२१)

नीता पाण्डेय

शोध छात्र

श्री गोविन्द गुरु यूनिवर्सिटी गोधरा, गुजरात

दूरभाष :९०९९४५४००५

neetapandey@281gmail.com

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

भूमिका :

साहित्य के क्षेत्र में साहित्य का मूल्यांकन करते हुए सृजनकर्ता के व्यक्तित्व की पहचान आवश्यक बन जाती है, क्योंकि जीवन और साहित्य का अभिन्न संबंध है। कोई भी साहित्यकार कितना भी तटस्थ क्यों न हों, फिर भी साहित्य में उसके जीवन के कुछ न अंश आ ही जाते हैं। साहित्यकार के व्यक्तित्व के मूल में पहुँचने के लिए पहले उसके जीवन में पहुँचने की आवश्यकता होती है। मैं श्री गोविन्द गुरु यूनिवर्सिटी से शोध कार्य कर रही हूँ और मेरे शोध का विषय 'पंकज मित्रजी की कहानियों में भूमंडलीकरण का प्रभाव' है। इसीलिए मैंने पंकज मित्रजी से साक्षात्कार किया और उनसे जुड़े हुए कई प्रश्नों की चर्चा की। पंकज मित्रजी समकालीन हिंदी साहित्य में एक सशक्त एवं प्रभावशाली लेखक हैं। समकालीन हिंदी कहानी अपने जिन युवा प्रतिभाओं की लेखनी पर भरोसा कर सकती है, उनमें से पंकज मित्रजी बहुत खास हैं। पंकज मित्रजी के चार कहानी संग्रहों और कुल ३७ कहानियाँ उनके पास होंगी – लेकिन उन्होंने अपनी रचनाओं में जिस सामर्थ्य से समकालीन विषय, विचार, संवेदना और यथार्थ को अभिव्यक्त किया है , वह उन्हें कथाकार के रूप में न केवल सफल बनाता है , बल्कि उन्हें कथाकार के रूप में एक विशिष्ट स्थान भी प्राप्त करवाता है।

देश के तकरीबन सभी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में उनकी कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं जैसे तदभव, कथादेश, हंस, कथाक्रम, वागर्थ, नया, ज्ञानोदय, कांची युद्धरत आम आदमी, परिकथा, अन्यथा (USA से प्रकाशित), इंडिया टुडे, वार्षिकी, शुक्रवार वार्षिकी, प्रभात खबर वार्षिकी , किस्सा, कथा पल प्रतिपल , रचना समय आदि। उनकी कहानियाँ अंग्रेजी में भी प्रकाशित हुई हैं जैसे U.S.A. से प्रकाशित पत्रिका Otherwise में उनकी कहानी प्रकाशित हुई है। अंग्रेजी में दलित साहित्य पर आलोचनात्मक पुस्तक 'The Changing faces of the oppressed castes in Indian English Novels' प्रकाशित हुई है। समाचार पत्रों में उनके लेख प्रकाशित हुए हैं। दैनिक जागरण के विशेष परिशिष्टों में तथा खबर्मंत्र में एक साल तक कॉलम लेखन उन्होंने किया है। अंग्रेजी एवं हिंदी पत्रिकाओं में आलोचनात्मक लेख प्रकाशित- Literary Journal, निशान आदि। रंगकर्म से उनका गहरा जुड़ाव रहा है। कई नाटकों का लेखन, मंचन एवं निर्देशन उन्होंने किया है। भागलपुर तथा हजारीबाग में नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' , 'कोर्ट मार्शल' , 'दूर देश की कथा' एवं 'अंधायुग' का निर्देशन एवं अभिनय

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

उन्होंने किया है। पंकज मित्रजी ।TPA राँची के वर्तमान अध्यक्ष भी है। पंकजजी को फिल्म माध्यम में भी अत्यधिक रूचि है और उन्होंने प्रसिद्ध निर्देशक प्रकाश झा की फिल्म "कथा माधोपुर की" में अभिनय भी किया है। ऐसे प्रतिभाशाली लेखक का साक्षात्कार लेने से पहले एक संकोच एवं भय की अनुभूति हुई थी कि उनसे कैसे बात हो पायेगी परन्तु साक्षात्कार के बाद पता चला कि वे न केवल श्रेष्ठ साहित्यकार है अपितु एक श्रेष्ठ व्यक्ति भी है। अत्यंत सहजता एवं मृदुभाषिता भी उनके गुण में शामिल है। ऐसे लेखक का साक्षात्कार मेरे लिए एक गर्व की बात है और यह साक्षात्कार एक अनुपम एवं अविस्मरणीय अनुभव रहा है।

आदरणीय पंकज मित्रजी से किये गए प्रश्न एवं उनके द्वारा दिए गए जबाव

(१) आपका जन्म कहाँ किस जिले / गाँव में और कब हुआ था?

उत्तर – १५ जनवरी १९६५ को मेरा जन्म राँची (तब बिहार अब झारखंड) में हुआ। परंतु मेरा शुरूआती जीवन बिहार के मुंगेर में बीता जहाँ हम कई पुश्तों से रह रहे थे।

(२) आपके बचपन का नाम और आपका जन्म कौन से नक्षत्र / तिथि में हुआ था? आपके जन्म से जुडी कोई रुचिकर बात यदि व्यक्त करना चाहें।

उत्तर - बचपन का मेरा पुकारू नाम पिंकू है और बड़े बूढे मुझे इसी नाम से बुलाते हैं। नक्षत्र, तिथि वगैरह का तो पता नहीं क्योंकि हमारे घर में कुंडली का प्रचलन नहीं है। हमारे दादा जी के समय तक था। इसका प्रचलन बंद होने की एक रोचक कथा भी है। दरअसल मेरे दादा जी की कुंडली देखकर किसी ज्योतिषी ने उनकी मृत्यु तिथि की भविष्यवाणी कर दी थी। उस दिन घर के सारे लोग सशंकित थे। तनाव बढ़ता जा रहा था। देर रात का समय दिया गया था तो सब जाग रहे थे। जब समय बीत गया तो मेरे दादाजी ने कुंडली निकाली, उसके टुकड़े - टुकड़े कर आग के हवाले कर दिया और यह तय हो गया आगे से किसी की भी जन्म कुंडली नहीं बनेगी।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

(३) आपके माताजी एवं पिताजी का नाम क्या है? उनके व्यवसाय एवं उनका संक्षिप्त परिचय।

उत्तर - मेरी माँ का नाम नमिता मित्र है और वह गृहिणी रही हैं हमेशा से और उनका इतना बड़ा योगदान है हम भाइयों बहन के व्यक्तित्व को गढ़ने में कि उसे बताया नहीं जा सकता है। विशेष रूप से सही गलत की पहचान या हमारी मूल्य प्रणाली उन्होंने ही दी है। बचपन से ही हमने उन्हें आस्थावान देखा है बल्कि यूँ कहें कि मेरा साहित्य की तरफ झुकाव ही उनकी बांग्ला की स्त्रियों की व्रतकथा के किस्से पढ़ - पढ़कर हुआ। मेरे पिता निर्मल मित्र जिन्हें हम बाबा कहते थे जिला न्यायाधीश के कार्यालय में पदस्थापित थे। बहुत सांस्कृतिक रूचि के सामाजिक आदमी थे। हर त्योहार रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ मिलकर मनाते थे। शहर में कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम हो - कवि सम्मेलन, नाटक, जात्रा हमें दिखाने ले जाते। सांस्कृतिक अभिरुचि उन्हीं की दी हुई है।

(४) आपने प्रारंभिक शिक्षा कहाँ से प्राप्त की? स्कूल का नाम एवं कोई रुचिकर क्षण, अनुभव हो तो अवश्य प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर - प्रारंभिक शिक्षा बिहार के मुंगेर शहर में हुई जो एक ऐतिहासिक महत्व का शहर है। महाभारत काल में यह अंगदेश के राजा कर्ण की राजधानी रही थी। मुद्गल ऋषि का आश्रम, मुगलों के समय गंगा के किनारे होने के कारण आर्थिक राजनीतिक महत्व था। मीर कासिम ने अँग्रेजों से लड़ाई की थी और फिर एक लंबी फ़ेहरिश्त स्वतंत्रता सेनानियों की। प्राथमिक शिक्षा एक छोटे से अँग्रेजी माध्यम के विद्यालय लाल बहादुर शास्त्री एकेडमी में और फिर टाउन उच्च विद्यालय मुंगेर। एक बंद रिक्शे में हम स्कूल जाया करते थे टीन के बक्से में किताबें काॅपियाँ रखकर। छुट्टी के बाद उन बक्सों को लड़ाना मनोरंजन था हमारा। स्वतंत्रता दिवस गणतंत्र दिवस पर जलेबियाँ मिलती थी स्कूल से। शिक्षिकाएं प्यार से पढ़ाती थी। इन बातों को अब तकरीबन पचास साल हो रहे हैं फिर भी उस वक्त के दोस्तों से मुलाकात होती रहती है और उन दिनों को याद करते हैं। पक्की दोस्तियाँ उसी समय हुआ करती हैं।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

(५) आपने माध्यमिक शिक्षा कहाँ से प्राप्त की ? स्कूल का नाम एवं कोई रुचिकर घटना जो आपके व्यक्तित्व निर्माण में प्रभावशाली और उपयोगी रही तो अवश्य प्रस्तुत कीजिये।

उत्तर - मुंगेर के टाउन उच्च विद्यालय में पढ़ाई की है। उस वक्त सरकारी स्कूलों में अच्छे शिक्षक होते थे, नियमपूर्वक पढ़ाई होती थी । हमारे शहर में तीन चार अच्छे स्कूल थे जिनके नामों पर कवितायें बनायी जाती - अपने अपने स्कूलों को बेहतर और दूसरे को कमतर बताने के लिए । एक उदाहरण - टाउन ट्रेनिंग तीनटंगा/माडल स्कूल भिखमंगा/गर्ल स्कूल गुलाब का फूल/सबसे बढ़िया जिला स्कूल । एक ही बात पर सारे स्कूलों के छात्र सहमत रहते कि गर्ल स्कूल गुलाब का फूल था । हम सभी अपने स्कूलों को प्यार करते और मैट्रिक के रिजल्ट को लेकर स्कूलों के बीच स्वस्थ प्रतियोगिता होती । एक दूसरे के स्कूलों की परवाह किए बगैर हम ट्यूशन पढ़ने जाते थे । इसमें शिक्षक की गुणवत्ता ही अंतिम पैमाना होता था । यहीं से मैंने मैट्रिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी से पास की थी । तकरीबन सड़सठ प्रतिशत अंक आए थे जिसकी चर्चा पूरे मुहल्ले में थी । अभी देखता हूँ तो वो प्रतिशत बहुत ही कम लगता है। अब के बच्चे ज्यादा ज़हीन हैं । उसी दौरान आपातकाल के विरोध में जयप्रकाश नारायण का संपूर्ण क्रांति आंदोलन चला था और आए दिन सीनियर छात्र नारे लगाते हुए स्कूल बंद करवाने आ जाते और हम बड़े खुश होते । हालांकि आंदोलन की तब न हमें कोई समझ थी न राजनीति से मतलब था । पर ये चीजें कोमल दिमाग पर नक़्श तो हो रही थी ।

(६) आपने उच्च शिक्षा कब और कहाँ से प्राप्त की ? आपकी अन्य कौन सी शिक्षा सम्बन्धी उपलब्धियाँ हैं और कहाँ से प्राप्त की गईं ?

उत्तर - मुंगेर के ही सबसे प्रतिष्ठित कॉलेज आर डी. एंड. डी. जे कॉलेज से ग्रेजुएशन किया अंग्रेजी साहित्य में ऑनर्स के साथ । वैसे इंटरमीडिएट साइंस से किया था और नंबर भी ठीक - ठाक आए थे । लेकिन साहित्य का कोई बीज था अंदर । तबतक साहित्य पढ़ डाला था बहुत सारा । एम. ए. करने भागलपुर आया क्योंकि तब मुंगेर में एम. ए. की पढ़ाई नहीं होती थी । इसी दौरान नुक्कड़ नाटकों से गहरा जुड़ाव हुआ । साहित्य के बीज को खाद पानी मिलने लगा । बहुत सारे दोस्त, रंगकर्मी, शिक्षक सबने इसमें योगदान दिया जैसे बाबा नागार्जुन कहते हैं - मेरी भी आभा है इसमें । नुक्कड़

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

नाटकों ने आमजन से, उनकी तकलीफों से परिचय कराया और एक बेहतर, संवेदनशील मनुष्य बनने में बड़ी मदद की। इसी दौरान बी एड भी कर डाला था। एम. ए. अंग्रेजी साहित्य में प्रथम श्रेणी आई थी तो लगता था कि कोई ठीक-ठाक सी नौकरी लग जाएगी। पर नौकरी १९९४ में लगी आकाशवाणी में। इस बीच दोस्तों के साथ बहुत सारा वक्त पटना में बीता प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करते हुए।

(७) उच्च शिक्षा में पी.एच डी. डिग्री में आपके संशोधन का क्या विषय था ? कुछ रुचिकर और अविस्मरणीय क्षण जिन्होंने आपको आपके व्यक्तित्व निर्माण में मदद किया।

उत्तर – पी. एच. डी. मैंने हजारीबाग में नौकरी करने के दौरान की थी। दरअसल हजारीबाग में विनोबा भावे विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर हैं डॉ. राजेश कुमार। बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं और बहुत उत्कृष्ट शिक्षक हैं तथा उससे भी अधिक शानदार मनुष्य हैं। सीनियर थे पर दोस्ताना व्यवहार था उनका। शाम में उनके ही घर में बैठकर हम दुनिया जहान की बातें करते - किताबों की, क्विज की, चरित्रों की, बेहद अच्छा हास्य बोध है उनका। वहीं बैठे-बैठे उन्होंने कहा कि मैं पी एच डी कर लूँ और मैं उनका पहला पी एच डी स्कॉलर हो गया। ऐसा रिसर्च गाइड ईश्वर सबको दें। हँसते- खेलते डॉक्टर बन गया। विषय था - भारतीय अंग्रेजी उपन्यासों में बदलता दलित चित्रण। राजेश कुमार सर का गहरा प्रभाव पड़ा है मेरे ऊपर। वह स्वयं भी एक बहुत अच्छे लेखक हैं। अंग्रेजी में कवितायें, कहानियाँ और उपन्यास भी लिख चुके हैं। इसी दौरान मेरे लेखन की भी शुरुआत हुई।

(८) आप किस व्यवसाय से शुरुआत में जुड़े ? आपने अभी तक कौन कौन से व्यवसाय से अपने आप को जोड़ा ? आपका व्यावसायिक जीवन एवं अनुभव।

उत्तर - मैंने १९९४ में आकाशवाणी में नौकरी शुरू की और अबतक इसी में हूँ। आकाशवाणी ने मुझे यह अवसर दिया कि बहुत सारे चरित्रों से मिल पाया। बहुत सारी कहानियाँ मिली। भाषा की एक अलग भंगिमा विकसित हुई।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

(९) आपका विवाह कहाँ, कब और किससे हुआ ?

उत्तर – १९९७ में मेरा विवाह लिजा मित्र से हुआ । मेरी पत्नी भागलपुर की हैं और उनकी पढ़ाई पश्चिम बंगाल में हुई है । जो कुछ भी मेरी साहित्यिक उपलब्धियाँ है वह मेरी पत्नी के सहयोग की वजह से हैं । मेरी बहुत सारी जिम्मेदारियाँ उन्होंने बिना किसी शिकायत के उठा लीं और घर में भी ऐसा वातावरण बनाये रखा कि पढ़ने लिखने में असुविधा न हो ।

(१०) आपने लेखक के रूप में लेखन आरम्भ कब किया? आपकी रूचि किन – किन साहित्यिक विधाओं में है ?

उत्तर - भागलपुर में पढ़ाई के दौरान ही नुक्कड़ नाटकों में भाग लेने लगा था और तभी नुक्कड़ नाटक लिखे थे पर बाकायदा लिखना छपना १९९६ से हुआ । मेरी पहली कहानी अपेंडिसाइटिस १९९६ में हंस में छपी थी और फिर सिलसिला चल निकला ।

(११) लेखक के रूप में आप पर सर्वाधिक प्रभाव किसका रहा है? आप किन कहानीकारों एवं साहित्यकारों से अत्यधिक प्रभावित हुए और किसकी लेखन शक्ति का प्रभाव आप पर अत्यधिक देखा जा सकता है।

उत्तर - हर लेखक बहुत सारे लेखकों से प्रभावित होता है ।देशी विदेशी लेखकों की एक लंबी सूची है । इनके अलावा बहुत सारे वरिष्ठ, समकालीन और कनिष्ठ लेखकों से भी प्रभावित हुआ हूँ । बांग्ला के उपन्यासकारों ताराशंकर बंदोपाध्याय, विमल मित्र, आशापूर्णा देवी, समरेश बसु, अंग्रेजी के टामस हार्डी, एमिली ब्रांटे, से लेकर भारतीय उपन्यासकारों अमिताभ घोष तक । हिन्दी में निश्चित रूप से रेणु, श्रीलाल शुक्ल, मनोहर श्याम जोशी, और बहुत सारे ।

(१२) आपकी भाषा शैली पर सर्वाधिक प्रभाव किसका और किस कहानी धारा का है ?

उत्तर - भाषा शैली वगैरह का निर्धारण तो आलोचकगण करेंगे पर कोशिश की है कि अपनी एक अलग भाषा एक अलग अंदाज ए बयां अर्जित करूँ ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

(१३) आपकी सर्वाधिक प्रिय कहानी संग्रह कौन सी है और क्यों?

उत्तर - चारों कहानी संग्रह मुझे पसंद है । महत्वपूर्ण यह है कि पाठकों को कौन सा पसंद है विशेषकर सहृदय पाठकों को ।

(१४) आपकी सर्वाधिक प्रिय कहानी कौन सी है और क्यों?

उत्तर - कहानी खुद अपनी जगह बना लेती हैं । आज इतने माध्यम हो गए हैं और कौन सी कहानी किन वजहों से पसंद की जाएंगी यह एक रहस्य है ।

(१५) आपने अपनी कहानियों में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है?

उत्तर - भाषा एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है । एक खास तरह की भाषा रचना हर लेखक के लिए चुनौती होती है जो उसकी खुद की विशिष्ट भाषा हो । कहानी को मूल रूप से कहने का फ़न मानता हूँ इसलिए भाषा बोलती हुई और जीवंत हो ऐसा मानना है मेरा । इस प्रकार की भाषा तभी होगी जब समाज से मनुष्यों से आपका जीवंत संपर्क होगा ।

(१६) आपकी कहानियों में भूमंडलीकरण का कौन कौन सा प्रभाव मिलता है और वह प्रभाव किस तरह प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर - नब्बे के दशक ने बहुत तेजी से होने वाले परिवर्तन देखे हैं । उदारीकरण और भूमंडलीकरण ने हमें शारीरिक रूप से नजदीक किया है, दुनिया को एक गांव में बदला है लेकिन गांव की आत्मीयता गायब है । सांप्रदायिक ध्रुवीकरण, संबंधों की ऊष्मा समाप्त हो जाना, और सबसे बढ़कर बाजार ने जिस तरह न सिर्फ हमारे वजूद को बल्कि दिमाग़ को भी कब्जे में ले लिया है वह अभूतपूर्व है । परिवर्तन का चरित्र मूलगामी है और बाजार के दुष्चक्र में आम आदमी फँस गया है । पर्व त्योहार से ऊष्मा गायब है दिखावा बढ़ा है। सबसे बड़ा नुकसान मानवीय मूल्यों और संबंधों का हुआ है । इन्हीं सब प्रवृत्तियों के, अत्यंत शक्तिशाली बाजार की ताकत से लड़ते भिड़ते निरीह मनुष्य के चित्र आपको मेरी कहानियों में मिलेंगे। मेरी कहानियाँ ही ऐसी शक्तियों के विरूद्ध मेरा प्रतिकार हैं ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

(१७) आपकी कहानियों की भाषा एवं शिल्प में व्यंग्य विन्यस्त दिखाई देता है। क्या इसकी कोई विशिष्ट वजह है ?

उत्तर: व्यंग्य निर्बल का शस्त्र होता है। हर लेखक के मन में एक बेहतर और सुन्दर दुनिया का स्वप्न होता है और वह दुनिया के वर्तमान स्वरुप से संतुष्ट नहीं रहता है। लेकिन दुनिया बदलने की इच्छा है और सक्षम नहीं है तो व्यंग्य का हथियार काम आता है। जैसे होली जैसे लोकपर्व में गाँव के शक्तिशाली लोगों के विरोध में आक्रोश व्यक्त करने के लिए हास्य व्यंग्य का सहारा लिया जाता है। यह हमारी देशी प्रविधि है।

****